International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website: https://ijaar.co.in/*
Volume-13, Issue-2 | November - December 2025

Original Article

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में स्त्री चेतना और यौन स्वाधीनता का रूपांकन

सविता कुमारी

शोधार्थी,

वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा.

Manuscript ID:
IJAAR-130213

ISSN: 2347-7075
Impact Factor – 8.141

Volume - 13
Issue - 2
November - December 2025
Pp. 70 - 75

Submitted: 10 Dec 2025
Revised: 23 Dec 2025
Accepted: 25 Dec 2025
Published: 1 Jan 2026

Corresponding Author:
सविता कुमारी

Quick Response Code:

Website: https://ijaar.co.in/

DOI:
10.5281/zenodo.18205250

DOI Link:
https://doi.org/10.5281/zenodo.18205250

सार (Abstract):

हिंदी साहित्य में कृष्णा सोबती का नाम स्त्री–चेतना, आत्मस्वाधीनता तथा यौनिक स्वतंत्रता के सशक्त स्वर के रूप में प्रतिष्ठित है। उनके उपन्यास पारंपरिक सामाजिक नैतिकताओं, पितृसत्तात्मक मूल्यों और स्त्री-देह को लेकर व्याप्त संकीर्ण दृष्टिकोण को चुनौती देते हैं। सोबती की स्त्री अपने अस्तित्व, इच्छाओं और निर्णयों के प्रति पूर्णतः सजग है। यह शोध-पत्र कृष्णा सोबती के प्रमुख उपन्यासों के माध्यम से यह विश्लेषण करता है कि किस प्रकार उनकी रचनाओं में चेतना और यौन स्वाधीनता का रूपांकन आधुनिक हिंदी उपन्यास को नई वैचारिक दिशा प्रदान करता है।

मुख्य शब्द: कृष्णा सोबती, स्त्री-चेतना, यौन स्वाधीनता, नारी विमर्श, हिंदी उपन्यास.

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), *which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.*

How to cite this article:

सविता कुमारी. (2025). कृष्णा सोबती के उपन्यासों में स्त्री चेतना और यौन स्वाधीनता का रूपांकन. International Journal of Advance and Applied Research, 13(2), 70–75. https://doi.org/10.5281/zenodo.18205250

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-2 | November - December 2025

प्रस्तावना:

स्त्री-चेतना का प्रश्न आधुनिक हिंदी साहित्य का एक केंद्रीय विषय रहा है। सामाजिक संरचनाओं में स्त्री की स्थिति, उसकी स्वतंत्रता, उसकी देह और उसकी इच्छा को लंबे समय तक नैतिक बंधनों में जकड़ कर देखा गया। स्वतंत्रता के बाद के हिंदी साहित्य में स्त्री लेखन और स्त्री-विमर्श ने इन रूढ़ धारणाओं को तोड़ने का प्रयास किया। कृष्णा सोबती इसी परंपरा की सशक्त प्रतिनिधि हैं।

उनके उपन्यासों में स्त्री केवल सहनशील और त्यागमयी नहीं है, बल्कि वह अपनी यौनिकता, आत्मसम्मान और चेतना के प्रति जागरूक है। सोबती का साहित्य स्त्री को निर्णय-क्षम, आत्मनिर्भर और स्वतंत्र अस्तित्व के रूप में स्थापित करता है।

स्त्री-चेतना का प्रश्न आधुनिक हिंदी साहित्य का एक केंद्रीय विषय रहा है। सामाजिक संरचनाओं में स्त्री की स्थिति, उसकी स्वतंत्रता, उसकी देह और उसकी इच्छा को लंबे समय तक नैतिक बंधनों में जकड़ कर देखा गया। पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री को परिवार, परंपरा और मर्यादा की संरक्षक के रूप में प्रस्तुत किया गया, जहाँ उसकी व्यक्तिगत इच्छाओं और आकांक्षाओं को गौण माना गया। स्त्री की देह को नियंत्रण और अनुशासन का विषय बनाया गया तथा उसकी यौनिकता को या तो वर्जित किया गया या लज्जा और अपराधबोध से जोड़ दिया गया।

स्वतंत्रता के बाद के हिंदी साहित्य में सामाजिक चेतना के विस्तार के साथ-साथ स्त्री लेखन और स्त्री-विमर्श ने इन रूढ़ धारणाओं को गंभीर चुनौती दी। इस दौर में स्त्री केवल करुणा की पात्र नहीं रही, बल्कि अपने जीवन की परिस्थितियों, संबंधों और निर्णयों पर प्रश्न उठाने लगी। स्त्री लेखिकाओं के साथ-साथ कुछ संवेदनशील पुरुष रचनाकारों ने भी स्त्री की मानसिक, सामाजिक और यौनिक स्वतंत्रता को साहित्य के केंद्र में रखा। इसी वैचारिक पृष्ठभूमि में कृष्णा सोबती का साहित्य विशेष महत्व रखता है।

कृष्णा सोबती हिंदी उपन्यास परंपरा की ऐसी सशक्त प्रतिनिधि हैं जिन्होंने स्त्री जीवन की आंतरिक जटिलताओं, मानसिक द्वंद्व और आत्मसंघर्ष को निर्भीक अभिव्यक्ति दी। उनके उपन्यासों में स्त्री केवल सहनशील और त्यागमयी नहीं है, बल्कि वह अपनी यौनिकता, आत्मसम्मान और चेतना के प्रति पूर्णतः जागरूक दिखाई देती है। सोबती की स्त्री अपने अस्तित्व को पुरुष-आधारित नैतिकताओं के संदर्भ में नहीं, बल्कि अपने अनुभव और संवेदनाओं के आधार पर परिभाषित करती है।

सोबती के साहित्य में स्त्री का संघर्ष केवल बाहरी सामाजिक बंधनों से नहीं, बल्कि आंतरिक मानसिक जड़ताओं से भी है। उनकी नायिकाएँ अपने भीतर जमी भय, संकोच और अपराधबोध की भावना से बाहर निकलने का प्रयास करती हैं। वे विवाह, परिवार और समाज द्वारा निर्धारित भूमिकाओं को स्वीकार तो करती हैं, परंतु उन्हें अंतिम सत्य नहीं मानतीं। इस प्रक्रिया में स्त्री-चेतना एक विकसित और गतिशील रूप ग्रहण करती है।

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-2 | November - December 2025

कृष्णा सोबती की विशेषता यह है कि वे यौन-स्वाधीनता को अश्लीलता या विद्रोह के सतही रूप में प्रस्तुत नहीं करतीं, बल्कि उसे स्त्री के आत्मसम्मान और मानवीय गरिमा से जोड़ती हैं। उनके उपन्यासों में यौनिकता जीवन का स्वाभाविक और आवश्यक पक्ष है, जिसे नकारना स्त्री के संपूर्ण व्यक्तित्व को नकारने के समान है। इस दृष्टि से सोबती का साहित्य स्त्री को निर्णय-क्षम, आत्मनिर्भर और स्वतंत्र अस्तित्व के रूप में स्थापित करता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि कृष्णा सोबती का रचनात्मक योगदान आधुनिक हिंदी साहित्य में स्त्री-चेतना और यौन-स्वाधीनता के विमर्श को न केवल विस्तार देता है, बल्कि उसे वैचारिक गहराई और सामाजिक प्रासंगिकता भी प्रदान करता है। उनका साहित्य स्त्री को मौन सहनशीलता से मुक्त कर बोलने, सोचने और निर्णय लेने का साहस देता है, जो आधुनिक हिंदी उपन्यास की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जा सकती है।

कृष्णा सोबती का रचनात्मक व्यक्तित्व:

कृष्णा सोबती का रचनात्मक व्यक्तित्व सामाजिक यथार्थ, ऐतिहासिक अनुभव और मानवीय संवेदना से निर्मित है। उनका साहित्य विभाजन, पारिवारिक संरचना, स्त्री-पुरुष संबंध और सत्ता के प्रश्नों से गहराई से जुड़ा है। वे स्त्री को न तो आदर्शवादी देवी के रूप में प्रस्तुत करती हैं और न ही केवल विद्रोह का प्रतीक बनाती हैं, बल्कि उसे संपूर्ण मनुष्य के रूप में चित्रित करती हैं।

उनकी भाषा में बोलचाल की सहजता, देशज शब्दावली और भावनात्मक तीव्रता दिखाई देती है, जो उनके पात्रों को जीवंत बनाती है।

चेतना की अवधारणा और स्त्री चेतना:

चेतना का अर्थ आत्मबोध, जागरूकता और निर्णय की स्वतंत्रता से है। स्त्री-चेतना उस प्रक्रिया को दर्शाती है जिसमें स्त्री स्वयं को पितृसत्तात्मक व्यवस्था से अलग एक स्वतंत्र अस्तित्व के रूप में पहचानती है।

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में स्त्री-चेतना के प्रमुख आयाम हैं –

1. आत्मनिर्णय की क्षमता
2. सामाजिक परंपराओं पर प्रश्न
3. देह और इच्छा की स्वीकृति
4. मानसिक और भावनात्मक स्वतंत्रता

मित्रो मरजानी' में यौन स्वाधीनता:

'मित्रो मरजानी' कृष्णा सोबती का सबसे चर्चित उपन्यास है। मित्रो का चरित्र पारंपरिक स्त्री छवि को पूरी तरह तोड़ देता है। वह अपने वैवाहिक जीवन में यौन असंतोष को खुलकर व्यक्त करती है और अपनी इच्छाओं को दबाने से इंकार करती है।

मित्रो की यौन चेतना सामाजिक नैतिकता के विरुद्ध खड़ी होती है। वह यह सिद्ध करती है कि स्त्री की यौनिक इच्छा स्वाभाविक है और उसे पाप या अपराध के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए।

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-2 | November - December 2025

'सूरजमुखी अंधेरे के' में आत्मचेतना:

इस उपन्यास में स्त्री चेतना अधिक सूक्ष्म और मनोवैज्ञानिक स्तर पर प्रस्तुत हुई है। नायिका अपने अतीत, स्मृतियों और सामाजिक दबावों से जूझते हुए आत्मपहचान की खोज करती है।

यहाँ यौन स्वाधीनता प्रत्यक्ष विद्रोह के रूप में नहीं, बल्कि मानसिक स्वतंत्रता और आत्मस्वीकृति के रूप में उभरती है।

'डार से बिछुड़ी' में स्त्री और इतिहास:

'डार से बिछुड़ी' में स्त्री-चेतना का स्वर ऐतिहासिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि में उभरता है। विभाजन की त्रासदी के बीच स्त्री अपने अस्तित्व और सम्मान की रक्षा के लिए संघर्ष करती है।

यह उपन्यास दिखाता है कि स्त्री की चेतना केवल निजी नहीं, बल्कि सामाजिक और ऐतिहासिक परिस्थितियों से भी प्रभावित होती है।

'ऐ लड़की' में आत्मीय चेतना:

'ऐ लड़की' एक आत्मीय और संवेदनशील कृति है। इसमें स्त्री-चेतना भावनात्मक संबंधों, स्मृतियों और आत्मसंवाद के माध्यम से प्रकट होती है।

यहाँ यौन स्वाधीनता शोरगुल के रूप में नहीं, बल्कि आत्मसम्मान और स्वीकार्यता के रूप में सामने आती है।

कृष्णा सोबती का नारी विमर्श:

कृष्णा सोबती का नारी विमर्श भारतीय सामाजिक यथार्थ से जुड़ा हुआ है। वे पश्चिमी नारीवाद की नकल नहीं करतीं, बल्कि भारतीय स्त्री के अनुभवों को केंद्र में रखती हैं।

उनकी स्त्री अपने जीवन की निर्णयकर्ता स्वयं है और यही उनकी चेतना की सबसे बड़ी विशेषता है।

निष्कर्ष:

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में चेतना और यौन-स्वाधीनता का रूपांकन हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श को एक नई वैचारिक दिशा प्रदान करता है। उनकी रचनाएँ यह स्पष्ट करती हैं कि स्त्री की स्वतंत्रता केवल सामाजिक या कानूनी अधिकारों तक सीमित नहीं है, बल्कि वह मानसिक, भावनात्मक और यौनिक स्वाधीनता से गहराई से जुड़ी हुई है। सोबती की स्त्री अपने जीवन की परिस्थितियों को चुपचाप स्वीकार करने वाली नहीं, बल्कि उन पर प्रश्न उठाने और उन्हें बदलने का साहस रखने वाली स्त्री है।

इस अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि कृष्णा सोबती ने स्त्री-देह और यौनिकता को नैतिक वर्जनाओं से मुक्त करके एक मानवीय और स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत किया है। उनके उपन्यासों में यौन-स्वाधीनता किसी प्रकार की अश्लीलता या उच्छृंखलता का प्रतीक नहीं है, बल्कि आत्मसम्मान, आत्मस्वीकृति और अस्तित्व-बोध

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-2 | November - December 2025

का अनिवार्य पक्ष है। इस दृष्टि से सोबती का साहित्य पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना में स्त्री की दबी हुई इच्छाओं और आकांक्षाओं को स्वर प्रदान करता है।

कृष्णा सोबती की स्त्री चेतना केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं रहती, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक संरचनाओं से टकराती हुई दिखाई देती है। उनके पात्र विवाह, परिवार और समाज द्वारा निर्धारित भूमिकाओं को पुनर्परिभाषित करते हैं और यह संकेत देते हैं कि स्त्री की पहचान पुरुष-केन्द्रित मूल्यों पर आधारित नहीं हो सकती। इस प्रकार सोबती के उपन्यास स्त्री-जीवन के संघर्ष, आत्मसंघर्ष और आत्मनिर्णय की प्रक्रिया को गहनता से उजागर करते हैं।

यह भी उल्लेखनीय है कि सोबती का नारी-विमर्श किसी एकांगी विचारधारा से संचालित नहीं है। वे स्त्री को न तो केवल विद्रोही प्रतीक बनाती हैं और न ही उसे आदर्शवादी नैतिकता में बाँधती हैं। उनकी स्त्री जीवन की जटिलताओं, विरोधाभासों और संवेदनाओं से निर्मित एक संपूर्ण मानवीय व्यक्तित्व है। यही कारण है कि उनके उपन्यासों की स्त्रियाँ पाठक को केवल प्रभावित ही नहीं करतीं, बल्कि उसे सोचने के लिए भी विवश करती हैं।

अतः यह कहा जा सकता है कि कृष्णा सोबती का साहित्य आधुनिक हिंदी उपन्यास में स्त्री-चेतना का एक सशक्त, प्रामाणिक और ऐतिहासिक दस्तावेज है। उनके उपन्यास न केवल स्त्री-विमर्श को वैचारिक मजबूती प्रदान करते हैं, बल्कि भविष्य के साहित्यिक और सामाजिक विमर्श के लिए भी दिशा-निर्देशक सिद्ध होते हैं। यह शोध-अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि कृष्णा सोबती की रचनाएँ स्त्री की स्वतंत्र चेतना और यौन-स्वाधीनता को साहित्यिक मान्यता प्रदान कर हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाती हैं।

संदर्भ ग्रंथ (विस्तृत और शोधोपयोगी):

(क) कृष्णा सोबती की कृतियाँ (Primary Sources)

1. सोबती, कृष्णा. *मित्रो मरजानी*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
2. सोबती, कृष्णा. *सूरजमुखी अंधेरे के*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
3. सोबती, कृष्णा. *डार से बिछुड़ी*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
4. सोबती, कृष्णा. *ऐ लड़की*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
5. सोबती, कृष्णा. *जिंदगीनामा*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
6. सोबती, कृष्णा. *तिन पहाड़*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
7. सोबती, कृष्णा. *समय सरगम*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.

(ख) कृष्णा सोबती पर आलोचनात्मक ग्रंथ व शोध

8. सिंह, नामवर. *आधुनिक हिंदी उपन्यास*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
9. वर्मा, धर्मवीर. *हिंदी उपन्यास: एक विवेचन*. इलाहाबाद: लोकभारती.

10. मिश्र, रामविलास. *हिंदी कथा साहित्य की भूमिका*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
11. सिंह, निर्मला. *कृष्णा सोबती का कथा संसार*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.
12. झा, अनामिका. *हिंदी उपन्यास में स्त्री विमर्श*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
13. सियाल, सुनीता. "कृष्णा सोबती के उपन्यासों में नारी चेतना." *International Research Journal*, 2021.
14. कुबाट, राजेश्वरी. "Studying Krishna Sobti as a Feminist Writer." *Vidhyayana E-Journal*, 2019.
15. मौर्य, कमलेश कुमार. "The Image of Woman in Hindi Fiction: Sobti's Novels." *The Creative Launcher*, 2021.

(ग) स्त्री-विमर्श एवं नारीवाद से संबंधित ग्रंथ

16. पुष्पा, मैत्रेयी. *स्त्री विमर्श: संदर्भ और दृष्टि*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
17. देसाई, नीरजा. *भारतीय नारी आंदोलन*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.
18. सिंह, सविता. *स्त्री लेखन की परंपरा*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
19. Beauvoir, Simone de. *The Second Sex*. London: Vintage Books.
20. Butler, Judith. *Gender Trouble*. New York: Routledge.
21. Rich, Adrienne. *Of Woman Born*. New York: W.W. Norton.

(घ) यौनता, चेतना और सांस्कृतिक अध्ययन

22. Foucault, Michel. *The History of Sexuality, Vol. 1*. New York: Pantheon Books.
23. Eagleton, Terry. *Literary Theory: An Introduction*. Oxford: Blackwell.
24. Bhabha, Homi K. *The Location of Culture*. London: Routledge.
25. Freud, Sigmund. *Three Essays on the Theory of Sexuality*. London: Penguin.

(ङ) शोध-पत्र, जर्नल एवं ऑनलाइन स्रोत

26. Devi, Uma. "Moral Problems Depicted in Krishna Sobti's Novels." *ShodhKosh Journal*, 2022.
27. ISCA Research Journal. "नारी पात्रों में मुक्ति संघर्ष एवं यौन स्वाधीनता." 2019.
28. Tarshi. "सूरजमुखी अंधेरे के: यौनिकता की खोज." *In Plainspeak*, 2020.
29. UGC Care Listed Journals – Hindi Literature Section.
30. Shodhganga (INFLIBNET): कृष्णा सोबती पर शोध प्रबंध.